RANCHI WOMEN'S COLLEGE,

RANCHI

(Autonomous College)

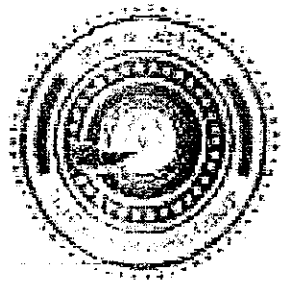

Constituent Unit

Of

Ranchi University, Ranchi

Undergraduate Syllabus

for

HINDI

2015

स्नातक

हिन्दी (प्रतिष्ठा)

स्नातक का पाठ्यक्रम यथावत् है।

(2015)

M Jyotsna
22-7-15
Rtd. Prof & H.O.D Hindi
Ranchi University
Ranchi

सिंह
हिन्दी विभाग
रांची-834008
रांची विश्वविद्यालय

22/7/15
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
राँची कॉलेज, राँची

22.7.15
22.7.2015

22/7/2015

Sunita Kumari
22.7.15

22.7.15

22.7.15

22.7.15

राँची वीमेन्स कॉलेज, राँची

(An Autonomous Unit of Ranchi University from 2012)

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग

सेमेस्टर पद्धति पर आधारित

पाठ्यक्रम

स्नातक (प्रतिष्ठा)

पत्रों की संख्या	– 16
पूर्णांक	– 1600
कुल सेमेस्टर	– 6

स्नातक (प्रतिष्ठा) प्रथम वर्ष – 400 Marks

स्नातक (प्रतिष्ठा) द्वितीय वर्ष – 400 Marks

स्नातक (प्रतिष्ठा) तृतीय वर्ष – 800 Marks

प्रथम वर्ष आधुनिक भारतीय भाषा (MIL) - 100 Marks

अहिन्दी (NON HN) - 50 Marks

सामान्य और वैकल्पिक हिन्दी (Sub. and General) - 100 Marks

द्वितीय वर्ष आधुनिक भारतीय भाषा (MIL) - 100 Marks

अहिन्दी (NON HN) - 50 Marks

सामान्य और वैकल्पिक हिन्दी (Sub. and General) - 100 Marks

तृतीय वर्ष वैकल्पिक हिन्दी (General) - 100 Marks

Paper wise distribution of Marks in B. A. Hindi (Hons)

Academic Year	Semester	Theory Paper	Full Marks MSE	Full Marks ESE	Total	Pass Marks	Duration
First Year	I	1	20	80	100	45	3 Hrs
		2	20	80	100	45	3 Hrs
	II	3	20	80	100	45	3 Hrs
		4	20	80	100	45	3 Hrs
Second Year	III	5	20	80	100	45	3 Hrs
		6	20	80	100	45	3 Hrs
	IV	7	20	80	100	45	3 Hrs
		8	20	80	100	45	3 Hrs
Third Year	V	9	20	80	100	45	3 Hrs
		10	20	80	100	45	3 Hrs
		11	20	80	100	45	3 Hrs
		12	20	80	100	45	3 Hrs
	VI	13	20	80	100	45	3 Hrs
		14	20	80	100	45	3 Hrs
		15	20	80	100	45	3 Hrs
		16	20	80	100	45	3 Hrs

स्नातक प्रथम वर्ष

सेमेस्टर – I

प्रश्न पत्र – 1, हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकाल और भक्तिकाल) समय – 3 घंटे

पूर्णांक – 20 + 80 = 100 उत्तीर्णांक – 45

पाठ्यक्रम –

(1) हिन्दी साहित्येतिहास का काल विभाजन और नामकरण

(2) आदिकाल – प्रवृत्तियाँ, पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता और रासो काव्य–परम्परा

(3) पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल)

(क) भक्तिकाल की पृष्ठभूमि का सामान्य परिचय

(ख) निर्गुण भक्तिधारा (परिचय)

(I) ज्ञानाश्रयी शाखा की प्रवृत्तियाँ

(II) प्रेमाश्रयी शाखा की प्रवृत्तियाँ

(ग) सगुण भक्तिधारा (परिचय)

(I) राम भक्ति धारा की प्रवृत्तियाँ

(II) कृष्ण भक्ति धारा की प्रवृत्तियाँ .

(4) टिप्पणी (सामान्य परिचय) – सूरदास, कबीरदास, तुलसीदास और जायसी

अंक विभाजन –
1. 20 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न – 20 x 2 = 40
2. 05 लघूत्तरीय प्रश्न 5 x 4 = 20
3. निबंधात्मक प्रश्न 2 x 10 = 20

सन्दर्भित पुस्तकें –
1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र
3. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त

स्नातक प्रथम वर्ष

सेमेस्टर – I

पत्र शीर्षक – 2. भक्तिकालीन और रीतिकालीन काव्य समय – 3 घंटे
पूर्णांक – 20 + 80 = 100 उत्तीर्णांक – 45

पाठ्यांश :

(1) सूरदास – विनय के पद – 4
बाल वर्णन – 4
श्रृंगार वर्णन – 4

(2) कबीर दास : दोहे और साखी – 8

(3) नानक : पद – 4

(4) बिहारी : दोहे – 8

(5) तुलसीदास : पद – 5 (विनय पत्रिका)

(6) मीरा : पद – 4

(7) रसखान : पद – 4

(8) विद्यापति : पद – 5

प्रश्न विभाजन : 1. दो आलोचनात्मक प्रश्न – 15 × 2 = 30
2. चार लघूत्तरीय प्रश्न – 5 × 4 = 20
3. सप्रसंग व्याख्या – 10 × 2 = 20
4. वस्तुनिष्ठ प्रश्न – 1 × 10 = 10

निर्धारित पाठ्य पुस्तक : काव्य कलश सं. डॉ. मंजु ज्योत्स्ना
डॉ. नागेश्वर सिंह
डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी

विनय के पद

1. चरन–कमल बंदौ हरिराई।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अन्धे को सब कुछ दरसाई।।
बहिरौ सुनै गूँग पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराई।
'सूरदास' स्वामी करुनामय, बार बार बंदौ तिहिं पाई।।

2. अविगत गति कछु कहत न आवै।
ज्यौ गूँगै मीठे फल कौ रस अन्तरगत हीं भावै।।
परम स्वाद सबही सुनिरंतर अमित तोष उपजावै।
मन बानी कौं अगम–अगोचर सो जानै जौ पावै।।
रुप–रेख–गुन–जाति–जुगति–बिनु निरालंब कित धावै।
सब विधि अगम विचारहिं तातैं सूर सगुन–पद गावै।।

3. तजौ मन हरि विमुखनि कौ संग।
जिनके संग कुमति उपजति है परत भजन में भंग।।
कहा होत पय पान कराए, विष नहिं तजत भुजंग।
कागहिं कहा कपूर चुगाए, स्वानन्हावाए–गंग।।
खर कौ कहा अरगजा लेपन, मरकट भूषण अंग।
गज को कहा सरित अन्हवाए, बहुरि धरे वह ढ़ंग।।
पाहन पत्ति बान नहिं बेधत, रीतौ करत निषंग।
सूरदास कारी कमरि पै, चढ़त न दूजौ रंग।।

4. हमारे प्रभु औगुन चित न धरौ।
समदरसी है नाम तुम्हारौ, सोई पार करौ।।
इक लोहा पूजा मैं राखत, इक घर बधिक परौ।
सो दुबिधा पारस नहिं जानत, कञ्चन करत खरौ।।
इक नदिया इक नार कहावत, मैलो नीर भरौ।
जब मिलि गए तब एक वरन ह्वै, गंगा नाम परौ।।
तन माया, ज्यौ ब्रह्म कहावत, सूर सु मिलि बिगरौ।।
कै इनको निरधार कीजियै, कै प्रन जात टरौ।।

विरह - वर्णन

1. पथिक ! सँदेसों कहियो जाय।
आवैंग हम दोनों भैया, मैया जनि अकुलाँय।।
याको बिलगु बहुत हम मान्यो जो कहि पठयो धाय।
कहँ लौं कीर्ति मानिए तुम्हरी बड़ो कियो पय प्याय।।
दोऊ दुखी होन नहिं पावहिं धूमरी धौरी गाय।
यद्यपि मथुरा बिभव बहुत है तुम बिन कुछ न सुहाय।
सूरदास ब्रजबासी लोगनि भेंटत हृदय जुड़ाय।।

2. देखियति कालिंदी अति कारी।
अहौ पथिक कहियौ उन हरि सौं, भई बिरह जुर जारी।।
गिरि–प्रजंक तैं गिरति धरनि धँसि, तरंग तरफ तन भारी।
तट बारू उपचार चूर, जल–पूर प्रस्वेद पनारी।
बिगलित कच कुस काँस कूल पर, पंक जु काजल सारी।
भौंरे भ्रमत अति फिरति भ्रमित गति, दिसि दिसि दीन दुखारी।।
निसि दिन चकई पिय जु रटति है, भई मनौ अनुहारी।
'सूरदास' प्रभु जो जमुना गति, सो गति भई हमारी।।

3. निसि दिन बरसत नैन हमारे।
सदा रहति बरषा रितु हम पर, जब तैं स्याम सिधारे।।
दृग अंजन न रहत निसि बासर, करे कपोल भए कारे।
कंचुकि–पट सूखत नहिं कबहूँ, उर बिच बहत पनारे।।
आँसू सलिल सबै भई काया, पल न जात रिस टारे।
'सूरदास' प्रभु यहै परेखौ, गोकुल काहै बिसारे।।

4. सँदेसनि मधुबन कूप भरे।
आपन तौ पठवत नहिं मोहन, हमरे फिरि न फिरे।।
जिते पथिक पठए मधुबन कौं, बहुरि न सोध करे।
कै वै स्याम सिखाई प्रमोधे, कै कहुँ बीच मरे।।
कागद गरे मेघ, मसि खूटी, सर दव लागि जरे।
सेवक 'सूर' लिखन कौ आँधौ, पलक कपाट अरे।।

बाल–लीला

1. जसोदा हरि पालनैं झुलावै।
हलरावै, दुलराइ मल्हावै, जोई–सोइ कुछ गावै।
मेरे लाल कौं आउ निंदरिया, काहैं न आनि सुवावै।
तू काहैं नहिं बेगहिं आवै, तोकों कान्ह बुलावै।
कबहुँक पलक हरि मूँदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावै।
सोवत जानि मौन है कै रहि, करि–करि सैन बतावै।
इहिं अन्तर अकुलाइ उठे हरि, जसुमति मधुरैं गावै।
जो सुख सूर अमर–मुनि दुरलभ, सो नँद–भामिनि पावै।।

2. सोभित कर नवनीत लिए।
घुटुरुनि चलत रेनु तन–मंडित, मुख दधि लेप किये।
चारु कपोल, लोल लोचन, गोरोचन–तिलक दिये।
लट–लटकनि मनु मत्त मधुप–गन, मादक मधुहिं पिए।
कठुला–कंठ, बज्र केहरि–नख, राजत रुचिर हिए।
धन्य सूर एकौ पल इहिं सुख, का सत कलप जिए।।

3. मैया, कबहिं बढ़ैगी चोटी ?
किती बार मोहि दूध पियत भइ, यह अजहूँ है छोटी।।
तू जो कहति बल की बेनी ज्यौं, है है लाँबी–मोटी।
काढ़त–गुहत–न्हवावत जैहै, नागिनि–सी भुइँ लोटी।
काँचौ दूध पियावति पचि–पचि, देति न माखन–रोटी।
सूरज चिरजीवौ दोउ भैया, हरि–हलधर की जोटी।।

4. मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायौ।
मोसौं कहत मोल कौ लीन्हौ, तू जसुमति कब जायौ ?
कहा करौं इहि रिस के मारैं, खेलन हौं नहिं जात।
पुनि–पुनि कहत कौन है माता, को है तेरौ तात।।
गोरे नंद जसोदा गोरी, तू कत स्यामल गात।
चुटकी दै–दै ग्वाल नचावत, हँसत सबै मुसुकात।
तू मोही कों मारन सीखी, दाउहि कबहुँ न खीझै।
मोहन–मुख रिस की ये बातैं, जसुमति सुनि–सुनि रीझै।
सुनहु कान्ह, बलभद्र चबाई, जनमत ही को धुत।
सूर स्याम मोहि गोधन की सौं, हौं माता तू पूत।।

भूषण

1. पावक–तुल्य अमीतन को भयो, मीतन को भयो धाम सुधा को;
आनँद भो गहिरो समुदै कुमुदावलि तारन को बहुधा को।
भूतल माहिं बली सिवराज भो, 'भूषन' भाषत सत्रु सुधा को;
बंदन तेज त्यों चंदनि कीरति, साधे सिंगार बधू–बसुधा को।।

2. एक कहैं कलपद्रुम है इमि पूरित है सबकी चित चाहै।
एक कहैं अवतार मनोज को यों तन मैं अति सुंदरता है।।
भूषण एक कहैं महि इंदु यों राज बिराजत बाढ़यो महा है।
एक कहैं नरसिंह है संगर एक कहैं नरसिंह सिवा है।।

3. जै जयति, जै आदि–सकति जै कालि, कपर्दिनि;
जै मधुकैटम–छलनि, देबि, जै महिषविमर्दिनी!
जै चमुंडि जै चंड–मुंड–भंडासुर–खंडिनी;
जै सुरक्त जै रक्तबीज– बिड्डाल–बिहंडिनि।
जै जै निसुंभ–सुंभद्दलनि, भनि 'भूषन' जै–जै भननि;
सरजा समत्थ सिवराज कहँ देहि बिजै, जै जग–जननि।।

4. इंद जिमि जंभ पर बाड़व सुअंभ पर,
रावन सदंभ पर रघुकुल राज है।
पौन बारिबाह पर संभु रतिनाह पर,
ज्यों सहस्त्रबाहु पर राम द्विजराज है।।
दावा द्रुम दंड पर चीता मृग–झुंड पर,
'भूषण' बितुंड पर : जैसे मृगराज है।
तेज तम अंस पर कान्ह जिमि कंस पर,
त्यों मलिच्छ–बंस पर सेर सिवराज है।।

Sub

बिहारी सतसई

1. मेरी भव–बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झांई परैं स्यामु हरित–दुति होइ।।

2. जगतु जनायौ जिहिं सकलु, सो हरि जान्यौ नांहि।
ज्यौं आंखिनु सबु देखियै, आंखि न देखी जांहि।।

3. पतवारी माला पकरि, और न कछू उपाउ।
तरि संसार–पयोधि कौं, हरि–नावैं करि नाउ।।

4. मोर मुकुट की चंद्रिकनु यौं राजत नँदनंद।
मनु ससिसेखर की अकस किय सेखर सत चंद।।

5. समै समै सुंदर सबै, रूपु कुरूपु न कोइ।
मन की रुचि जेती जितै, तित तेती रुचि होइ।।

6. पावस–घन–अंधियार महि रह्यौ भेदु नहिं आनु।
रात द्यौस जान्यौ परतु लखि चकई चकवानु।।

7. लटुवा लौं प्रभु कर गहैं, निगुनी गुन लपटाइ।
वहै गुनी कर तै छुटें, निगुनीयै ह्वै जाय।।

8. पल न चलैं, जकि सी रही, थकि सी रही उसास।
अबहीं तनु रितयौ, कहौ, मनु पठयौ किहिं पास।।

कबीरदास

1. जय लगि नाता जगत का तब लगि भक्ति न होय।
नाता तोड़ हरि भजे भक्त कहावै सोय।।

2. देखादेखी भक्ति का कबहुँ न चढ़सी रंग।
विपति पड़े यों छाँड़सी ज्यों केंचुली भुजंग।।

3. कामी क्रोधी लालची इन तें भक्ति न होय।
भक्ति करै कोइ सूरमा जाति बरन कुल खोय।।

4. तूँ तूँ करता तूँ भया तुझ में रहा समाय।
तुझ माँही मन मिलि रहा, अब कहुँ अनत न जाय।।

5. और कर्म सब कर्म है भक्ति कर्म निष्कर्म।
कहै कबीर पुकारि के भक्ति करो तजि धर्म।।

6. यहु तन जालौं मसि करौं, लिखौं राम का नाउँ।
लेखणिं करुँ करंक की, लिखि लिखि राम पठाउँ।।

7. अंखड़ियाँ तो झाई पड़ी, पंथ निहारि निहारि।
जीभड़ियां छाला पड़्या, राम पुकारि पुकारि।।

8. मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा।
तेरा तुझको सौंपता, क्या लागै मेरा।।

BA I - SEM I

पाठ्य सामग्री
पत्र: HIN10
पृ. 7/9

विद्यापति

वंदना

(1)

नंदक नंदन कदम्बेरि तरु-तर, धिरे-धिरे मुरलि बोलाब।
समय संकेत-निकेतन बइसल, बेरि-बेरि बोलि पठाब॥
सामरि, तोरा लागि, अनुखन बिकल मुरारि॥
जमुनाक तिर उपवन उदबेगल, फिर-फिर ततहि निहारि।
गोरस बिकनिके अबइत जाइत, जनि-जनि पुछ बनमारि॥
तोहे मतिमान, सुमति मधुसूदन बचन सुनह किछु मोरा।
भनइ विद्यापति सुन बरजौवति बंदह नंद-किसोरा॥

राधा की वंदना

(2)

देख देख राधा रूप अपार।
अपरुब के बिहि आनि मेराओल खिति-तल लावनि सार॥
अंगहि अंग अनंग मुरछाएत हेरए पड़ए अथीर।
मनमथ कोटि-मथन करु जे जन से हेरि महि-मधि गीर॥
कत-कत लखिमि चरन तल नेओछए रंगिनि हेरि बिभोरि।
करु अभिलाख मनहि पदपंकज अहनिसि कोर अगोरि॥

देवी-वंदना

(3)

जय जय भैरवि असुर-भयाउनि, पसुपति-भामिनि माया।
सहज सुमति वर दिअ हे गोसाउनि, अनुगति गति तुअ पाया॥
बासर-रैनि सवासन सोभित चरन, चंद्रमनि चूड़ा।
कतओक दैत्य मारि मुँह मेलल, कतेक उगिलि कर कूड़ा॥
सामर बरन, नयन अनुरंजित, जलद-जोग फुल कोका।
कट कट विकट ओठ-पुट पाँड़रि, लिधुर-फेन उठ फोका॥
घन घन घनन घुघुर कत बाजए, हन हन कर तुअ काता।
विद्यापति कवि तुअ पद सेवक, पुत्र बिसरु जनि माता॥

गंगा-स्तुति

(4)

कतसुख सार पाओल तुअ तीरे। छाड़इते निकट नयन बह नीरे॥
कर जोरि बिनमओं विमल तरंगे। पुन दरसन होअ पुनमति गंगे॥
एक अपराध छेमब मोर जानी। परसल माए पाए तुअ पानी॥
कि करब जप तप जोग धेआने। जनम कृतारथ एकहि सनाने॥
भनइ विद्यापति समदओं तोहि। अंत काल जनु बिसरह मोहि॥

Sub

रसखान

सवैया

(1)

मानुष हौं तो वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वार
जो पशु हौं तो कहा बस मेरो चरौं नित नंद की धेनु मँझार
पाहन हौं तो वही गिरि को जो धर्यो कर छत्र पुरंदर धारन
जौ खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदी कूल कदंब की

(2)

कान्ह भये बस बाँसुरी के अब कौन सखी हमकों चहिहै।
निस द्यौस रहे सँग साथ लगी यह सौतिन तापन क्यों सहिहै
जिन मोहि लियो मनमोहन को रसखानि सदा हमकों दहिहै।
मिलि आपुस सबै भाग चलें अब तो ब्रज में बाँसुरी रहिहै॥

(3)

धूरि भरे अति शोभित श्याम जू तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।
खेलत खात फिरैं अँगना पग पैंजनी बाजति, पीरी कछोटी॥
वा छवि को रसखानि बिलोकत वारत काम-कला निज कोटी
काग के भाग बड़े सजनी हरि हाथ सों लै गयो माखन रोटी

(4)

सोहत हैं चँदवा सिर मौर के जैसियै सुन्दर पाग कसी हैं।
तैसियै गोरज भाल बिराजति जैसी हियै बनमाल लसी हैं॥
रसखानि बिलोकत बौरी भई दृग मूँदि के ग्वालि पुकारि हँसी
खोलि री घूँघट खोलौं कहा वह मूरति नैनन माँझ बसी हैं

स्नातक प्रथम वर्ष

सेमेस्टर - I

आधुनिक भारतीय भाषा हिन्दी (N.H.)

(अहिन्दी भाषी छात्र–छात्राओं के लिए)

पूर्णांक – 50 उतीर्णांक – 17 समय – 1½ घंटे

पाठ्यक्रम :–

मैथिलीशरण गुप्त – पंचवटी (पूर्वाभास और पंचवटी के प्रथम 70 पद)

व्याकरण खण्ड – आवेदन, लिंग, वचन उपसर्ग, प्रत्यय

अंक विभाजन :

वस्तुनिष्ठ प्रश्न	2 x 5 = 10
आलोचनात्मक **प्रश्न**	10 x 2 = 20
प्रशासनिक पत्रा**चार**	10
व्याकरण	10
	कुल – 50

स्नातक प्रथम वर्ष

सेमेस्टर - I

वैकल्पिक विषय के रूप में हिन्दी (General and Subsidiary)

पूर्णांक [illegible] उत्तीर्णांक — 33

पाठ्यक्रम :—

1. [illegible] साहित्येतिहास का संक्षिप्त परिचय
2. आदिकाल

   (क) पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता

   (ख) रासो परम्परा

   (ग) [illegible] परिचय — सिद्ध साहित्य और नाथ साहित्य
3. भक्तिकाल

   (क) [illegible] भूमि

   (ख) निर्गुण भक्ति धारा की प्रवृत्तियाँ

   (ग) सगुण भक्ति धारा की प्रवृत्तियाँ

अंक [illegible]

चार आलोचनात्मक प्रश्न	15 x 4 = 60
वस्तुनिष्ठ प्रश्न	1 x 20 = 20
लघु उत्तरीय प्रश्न	4 x 5 = 20

सहायक पुस्तकें —

हिन्दी साहित्य का इतिहास — आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

हिन्दी [illegible] का इतिहास — सं. डॉ. नगेन्द्र

स्नातक प्रथम वर्ष

सेमेस्टर - I

आधुनिक भारतीय भाषा हिन्दी (M.I.L.)

(हिन्दी भाषी छात्र--छात्राओं के लिए)

पूर्णांक -- 100 **उतीर्णांक -- 33** समय -- 3

पाठ्यक्रम :-

रश्मिरथी – रामधारी सिंह दिनकर :– 1–3 सर्ग

व्याकरण खण्ड – अपठित गद्यांश, संक्षेपण, पल्लवन, अनुवाद, पारिभाषिक शब्दावली प्रशासनिक पत्राचार।

अंक विभाजन :–

1. आलोचनात्मक प्रश्न	15 x 2 = 30
2. सप्रसंग व्याख्या	10 x 2 = 20
3. व्याकरण खण्ड	10 x 3 = 30
4. प्रशासनिक पत्राचार	10
5. वस्तुनिष्ठ प्रश्न	1 x 10 = 10
	कुल – 100

स्नातक प्रथम वर्ष

सेमेस्टर - II

पत्र संख्या – 3. आधुनिक **काव्य** (पूर्व छायावाद और छायावाद) [illegible]

पूर्णांक – 20 + 80 = 100 [illegible]

पाठ्यक्रम :--

(1) भारतेन्दु : सवैया – 4

(2) मैथिलीशरण गुप्त : **यशोधरा** और कैकेयी का अनुताप

(3) सूर्यकान्त त्रिपाठी **निराला** : तोड़ती पत्थर और वनबेला

(4) महादेवी वर्मा : मैं नीर–**भरी** दुःख की बदली और मधुर–मधुर मेरे दीपक जल

(5) सुमित्रानन्दन पंत : नौका विहार और प्रथम रश्मि

(6) जयशंकर प्रसाद : हिमाद्रि तुंग श्रृंग से और मेरे नाविक !

अंक विभाजन :-- 1. दो **आलोचनात्मक** प्रश्न – 15 x 2 = 30

2. चार लघूत्तरीय प्रश्न – 5 x 4 = 20

3. दो सप्रसंग व्याख्या – 10 x 2 = 20

4. वस्तुनिष्ठ प्रश्न – 1 x 10 = 10

निर्धारित पुस्तक : काव्य–सुधा सं. डॉ. मंजु ज्योत्सना

डॉ. नागेश्वर सिंह

डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी

स्नातक प्रथम वर्ष

सेमेस्टर – II

पत्र संख्या – 4. गद्य साहित्य (एकांकी और नाटक) समय – 3 घंटे

पूर्णांक – 20 + 80 = 100 उत्तीर्णांक – 45

पाठ्यक्रम :–

(1) जयशंकर प्रसाद : नाटक – ध्रुवस्वामिनी

(2) मोहन राकेश : एकांकी – अंडे के छिलके

(3) उपेन्द्र नाथ अश्क : एकांकी – तौलिये

अंक विभाजन :– 1. दो आलोचनात्मक प्रश्न – 15 x 2 = 30

2. चार लघूत्तरीय प्रश्न – 5 x 4 = 20

3. दो सप्रसंग व्याख्या – 10 x 2 = 20

4. वस्तुनिष्ठ प्रश्न – 1 x 10 = 10

सहायक ग्रंथ :–

1. प्रसाद के नाटक – डॉ. सिद्धनाथ कुमार
2. हिन्दी एकांकी और एकांकीकार – डॉ. रमा रूद

स्नातक प्रथम वर्ष

सेमेस्टर II

आधुनिक भारतीय भाषा हिन्दी (N.H.)

(अहिन्दी भाषी छात्र–छात्राओं के लिए)

पूर्णांक — 50

उत्तीर्णांक — 17

समय — 1½ घंटे

पाठ्यक्रम :–

1. मैथिली शरण गुप्त --पंचवटी (71 से सम्पूर्ण पद)
2. सुदर्शन — हार की जीत
3. प्रेमचन्द — बड़े घर की बेटी

व्याकरण खण्ड — ज्ञापन या परिपत्र, संधि, समास

अंक विभाजन :–

वस्तुनिष्ठ प्रश्न	1 x 10 = 10
आलोचनात्मक प्रश्न	10 x 2 = 20
ज्ञापन या परिपत्र	10
संधि / समास	10
कुल =	50

स्नातक प्रथम वर्ष

सेमेस्टर II

वैकल्पिक विषय के रूप में हिन्दी (General and Subsidiary)

पूर्णांक – 100 उत्तीर्णांक – 33 समय – 3 घंटे

पाठ्यक्रम :–

1. सूरदास (4 पद)
2. कबीरदास (8 दोहे)
3. बिहारी – (8 दोहे)
4. रसखान : (4 पद)
5. तुलसीदास : (5 पद) विनय पत्रिका

अंक विभाजन –

आलोचनात्मक प्रश्न	15 x 3 = 45
वस्तुनिष्ठ प्रश्न	1 x 20 = 20
व्याख्या	10 x 2 = 20
लघूत्तरीय	5 x 3 = 15
	कुल = 100

बाल–लीला

1. जसोदा हरि पालनैं झुलावै।
हलरावै, दुलराइ मल्हावै, जोई–सोइ कुछ गावै।
मेरे लाल कौं आउ निंदरिया, काहैं न आनि सुवावै।
तू काहैं नहिं बेगहिं आवै, तोकों कान्ह बुलावै।
कबहुँक पलक हरि मूँदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावै।
सोवत जानि मौन ह्वै कै रहि, करि–करि सैन बतावै।
इहिं अन्तर अकुलाइ उठे हरि, जसुमति मधुरैं गावै।
जो सुख सूर अमर–मुनि दुरलभ, सो नँद–भामिनि पावै।।

2. सोभित कर नवनीत लिए।
घुटुरुनि चलत रेनु तन–मंडित, मुख दधि लेप किये।
चारु कपोल, लोल लोचन, गोरोचन–तिलक दिये।
लट–लटकनि मनु मत्त मधुप–गन, मादक मधुहिं पिए।
कठुला–कंठ, बज्र केहरि–नख, राजत रुचिर हिए।
धन्य सूर एकौ पल इहिं सुख, का सत कलप जिए।।

3. मैया, कबहिं बढ़ैगी चोटी ?
किती बार मोहि दूध पियत भइ, यह अजहूँ है छोटी।।
तू जो कहति बल की बेनी ज्यौं, ह्वै है लाँबी–मोटी।
काढ़त–गुहत–न्हवावत जैहै, नागिनि–सी भुइँ लोटी।
काँचौ दूध पियावति पचि–पचि, देति न माखन–रोटी।
सूरज चिरजीवौ दोउ भैया, हरि–हलधर की जोटी।।

4. मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायौ।
मोसौं कहत मोल कौ लीन्हौ, तू जसुमति कब जायौ ?
कहा करौं इहि रिस के मारैं, खेलन हौं नहिं जात।
पुनि–पुनि कहत कौन है माता, को है तेरौ तात।।
गोरे नंद जसोदा गोरी, तू कत स्यामल गात।
चुटकी दै–दै ग्वाल नचावत, हँसत सबै मुसुकात।
तू मोही कों मारन सीखी, दाउहि कबहुँ न खीझै।
मोहन–मुख रिस की ये बातैं, जसुमति सुनि–सुनि रीझै।
सुनहु कान्ह, बलभद्र चबाई, जनमत ही को धुत।
सूर स्याम मोहि गोधन की सौं, हौं माता तू पूत।।

Sub

बिहारी सतसई

1. मेरी भव–बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झांई परैं स्यामु हरित–दुति होइ।।

2. जगतु जनायौ जिहिं सकलु, सो हरि जान्यौ नांहि।
ज्यौं आंखिनु सबु देखियै, आंखि न देखी जांहि।।

3. पतवारी माला पकरि, और न कछू उपाउ।
तरि संसार–पयोधि कौं, हरि–नावैं करि नाउ।।

4. मोर मुकुट की चंद्रिकनु यौं राजत नँदनंद।
मनु ससिसेखर की अकस किय सेखर सत चंद।।

5. समै समै सुंदर सबै, रूपु कुरूपु न कोइ।
मन की रुचि जेती जितै, तित तेती रुचि होइ।।

6. पावस–घन–अंधियार महि रह्यौ भेदु नहिं आनु।
रात द्यौस जान्यौ परतु लखि चकई चकवानु।।

7. लटुवा लौं प्रभु कर गहैं, निगुनी गुन लपटाइ।
वहै गुनी कर तै छुटें, निगुनीयै ह्वै जाय।।

8. पल न चलैं, जकि सी रही, थकि सी रही उसास।
अबहीं तनु रितयौ, कहौ, मनु पठयौ किहिं पास।।

कबीरदास

1. जय लगि नाता जगत का तब लगि भक्ति न होय।
नाता तोड़ हरि भजें भक्त कहावै सोय।।

2. देखादेखी भक्ति का कबहुँ न चढ़सी रंग।
विपति पड़े यों छाँड़सी ज्यों केंचुली भुजंग।।

3. कामी क्रोधी लालची इन तें भक्ति न होय।
भक्ति करै कोइ सूरमा जाति बरन कुल खोय।।

4. तूँ तूँ करता तूँ भया तुझ में रहा समाय।
तुझ माँही मन मिलि रहा, अब कहुँ अनत न जाय।।

5. और कर्म सब कर्म है भक्ति कर्म निष्कर्म।
कहै कबीर पुकारि के भक्ति करो तजि धर्म।।

6. यहु तन जालौं मसि करौं, लिखौं राम का नाउँ।
लेखणिं करुँ करंक की, लिखि लिखि राम पठाउँ।।

7. अंखड़ियाँ तो झाई पड़ी, पंथ निहारि निहारि।
जीभड़ियां छाला पड़्या, राम पुकारि पुकारि।।

8. मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा।
तेरा तुझको सौंपता, क्या लागै मेरा।।

रसखान

सवैया

(1)

मानुष हौं तो वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन
जो पशु हौं तो कहा बस मेरो चरौं नित नंद की धेनु मँझारन
पाहन हौं तो वही गिरि को जो धर्यो कर छत्र पुरंदर धारन
जो खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदी कूल कदंब की

(2)

कान्ह भये बस बाँसुरी के अब कौन सखी हमकों चहिहै।
निसि द्यौस रहे सँग साथ लगी यह सौतिन तापन क्यों सहिहै
जिन मोहि लियो मनमोहन को रसखानि सदा हमकों दहिहै।
मिलि आओ सबै भाग चलें अब तो ब्रज में बाँसुरी रहिहै।।

(3)

धूरि भरे अति शोभित श्याम जू तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।
खेलत खात फिरैं अँगना पग पैंजनी बाजति, पीरी कछौटी।।
वा छवि को रसखानि बिलोकत वारत काम-कला निज कोटी
काग के भाग बड़े सजनी हरि हाथ सों लै गयो माखन रोटी

(4)

सोहत है चँदवा सिर मोर के जैसिये सुन्दर पाग कसी है।
तैसिये गोरज भाल बिराजति जैसी हिये बनमाल लसी है।।
रसखानि बिलोकत बौरी भई दृग मूँदि कै ग्वालि पुकारि हँसी
खोलि री घूँघट खोलौं कहा वह मूरति नैनन माँझ बसी है

स्नातक प्रथम वर्ष

सेमेस्टर II

आधुनिक भारतीय भाषा हिन्दी (M.I.L.)

(हिन्दी भाषी छात्र–छात्राओं के लिए)

पूर्णांक — 100 | उत्तीर्णांक — 33 | समय — 3 घंटे

पाठ्यक्रम :–

रश्मिरथी — रामधारी सिंह दिनकर — 4 से 7 सर्ग

व्याकरण खण्ड — मुहावरे, लोकोक्तियां, शब्द– शुद्धि, वाक्य — शुद्धि, शब्द ज्ञान, पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द, अनेकार्थी शब्द, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, प्रशासनिक पत्राचार।

अंक विभाजन :–

आलोचनात्मक प्रश्न	15 x 2 = 30
सप्रसंग व्याख्या	10 x 2 = 20
व्याकरण खण्ड	10 x 3 = 30
प्रशासनिक पत्राचार	10
वस्तुनिष्ठ प्रश्न	1 x 10 = 10
	कुल — 100

द्वितीय वर्ष

सेमेस्टर - III

प्रश्न संख्या – 5. हिन्दी कथा साहित्य (उपन्यास एवं कहानी) — समय – 3 घंटे

पूर्णांक – 20 + 80 = 100 — उत्तीर्णांक – 45

पाठ्यक्रम :–

(1) मानस का हंस (उपन्यास) – अमृतलाल नागर

(2) प्रतिनिधि कहानियाँ

(क) उसने कहा था	–	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी.
(ख) प्रेमचन्द	–	सद्गति
(ग) जयशंकर प्रसाद	–	आकाशदीप
(घ) फणीश्वर नाथ 'रेणु'	–	तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम
(ङ) जैनेन्द्र कुमार	–	पत्नी
(च) यशपाल	–	फूलों का कुरता.

अंक विभाजन :–

1. दो आलोचनात्मक प्रश्न – 20 x 2 = 40
2. दो लघूत्तरीय प्रश्न – 5 x 2 = 10
3. दो सप्रसंग व्याख्या – 10 x 2 = 20
4. वस्तुनिष्ठ प्रश्न – 1 x 10 = 10

निर्धारित पुस्तकें :–

1. मानस का हंस – अमृतलाल नागर
2. मेरी प्रिय कहानियाँ – यशपाल
3. प्रतिनिधि कहानियाँ – सं. शेष 'आनन्द मधुकर'
4. प्रतिनिधि कहानियाँ – फणीश्वर नाथ 'रेणु'

द्वितीय वर्ष

सेमेस्टर - III

पत्र संख्या – 8 आधुनिक काव्य (छायावादोत्तर कविता) समय – 3 घंटे

पूर्णांक – 20 + 80 = 100 उतीर्णांक – 45

पाठ्यक्रम :–

(1) दिनकर – हिमालय का संदेश, मनुज का श्रेय, आलोकधन्वा

(2) अज्ञेय – कलगी बाजरे की, नदी के द्वीप, हरी घास पर क्षणभर

(3) धर्मवीर भारती – टूटा पहिया, एक प्रश्न, कवि और कल्पना

(4) नागार्जुन – सिन्दूर तिलकित भाल, 26 जनवरी पन्द्रह अगस्त, स्वदेशी शासक

(5) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना – कैसी विचित्र है जिन्दगी, लीक पर वे चलें, युद्ध–स्थिति

अंक विभाजन :–

1.	दो आलोचनात्मक प्रश्न	– 20 x 2 = 40
2.	दो लघूत्तरीय प्रश्न	– 5 x 2 = 10
3.	दो सप्रसंग व्याख्या	– 10 x 2 = 20
4.	वस्तुनिष्ठ प्रश्न	– 1 x 10 = 10

निर्धारित पुस्तक :– छायावादोत्तर काव्य – सं० डॉ. रणजीत सिंह

12/08/13

स्नातक द्वितीय वर्ष

सेमेस्टर – III

आधुनिक भारतीय भाषा हिन्दी (M.I.L.)

(हिन्दी भाषी छात्र–छात्राओं के लिए)

पूर्णांक – 100 उत्तीर्णांक – 33 समय – 3 घंटे

पाठ्यक्रम :–

खण्ड (अ)

निर्धारित निबन्ध

1. विद्यानिवास मिश्र – मेरा गांव, मेरा घर
2. रामवृक्ष बेनीपुरी – गेहूं और गुलाब
3. सरदार पूर्ण सिंह – मजदूरी और प्रेम

खण्ड (ब)

हिन्दी भाषा के विविध रूप – कार्यालयी भाषा, मीडिया की भाषा।

अंक विभाजन :–

आलोचनात्मक प्रश्न	15 x 3 = 45
व्याख्या	10 x 2 = 20
वस्तुनिष्ठ प्रश्न	2 x 10 = 20
टिप्पणी	5 x 3 = 15
	कुल = 100

12/08/13

स्नातक द्वितीय वर्ष

सेमेस्टर III

आधुनिक भारतीय भाषा हिन्दी (N.H.)

(अहिन्दी भाषी छात्र–छात्राओं के लिए)

पूर्णांक – 50 | उत्तीर्णांक – 17 | समय – 1½ घंटे

पाठ्यक्रम :–

1. प्रेमचन्द -- पांच फूल (प्रथम 3 कहानी)
2. प्रशासनिक शब्दावली का अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद, संक्षेपण

अंक विभाजन :–

आलोचनात्मक प्रश्न	20 x 1 = 20
वस्तुनिष्ठ प्रश्न	1 x 10 = 10
प्रशासनिक शब्दावली अनुवाद	2 x 5 = 10
संक्षेपण	10
	कुल = 50

12/03/13 12.3.13

स्नातक द्वितीय वर्ष

सेमेस्टर III

सामान्य और वैकल्पिक विषय के रूप में हिन्दी

(General and subsidiary)

पूर्णांक – 100 उतीर्णांक – 33 समय – 3 घंटे

पाठ्यक्रम :–

1. गबन प्रेमचन्द
2. ललित निबंध – विद्यानिवास मिश्र

अंक विभाजन :–

आलोचनात्मक प्रश्न	20 x 2 = 40
वस्तुनिष्ठ प्रश्न	2 x 10 = 20
व्याख्या	10 x 2 = 20
लघूत्तरीय प्रश्न	5 x 4 = 20
	कुल = 100

द्वितीय वर्ष

सेमेस्टर - IV

पत्र संख्या – 7 हिन्दी कथा साहित्य (उपन्यास एवं कहानी)

समय – 3 घंटे

पूर्णांक 20 + 80 = 100

उतीर्णांक – 45

पाठ्यक्रम :–

(1) बलचनमा (उपन्यास) – नागार्जुन

(2) कहानियाँ

(क) खोई हुई दिशाएँ – कमलेश्वर

(ख) मलबे का मालिक – मोहन राकेश

(ग) परिन्दे – निर्मल वर्मा

(घ) सिलिया – सुशीला टाकभौरे

(ङ) शरणदाता – अज्ञेय

(च) वापसी – उषा प्रियवदा

अंक विभाजन :–

1. दो आलोचनात्मक प्रश्न – 20 x 2 = 40
2. दो लघूत्तरीय प्रश्न – 5 x 2 = 10
3. दो सप्रसंग व्याख्या – 10 x 2 = 20
4. वस्तुनिष्ठ प्रश्न – 1 x 10 = 10

Signature
2/08/13

द्वितीय वर्ष

सेमेस्टर - IV

पत्र संख्या – 8. हिन्दी भाषा एवं साहित्य का इतिहास (रीतिकाल) समय – 3 घंटे
पूर्णांक – 20 + 80 = 100 उतीर्णांक – 45

पाठ्यक्रम :–

(1) रीतिकाल

(क) तत्कालीन परिस्थितियाँ

(ख) सीमांकन

(ग) नामकरण

(घ) साहित्यिक प्रवृत्तियाँ

(ङ) 'रीति' शब्द की व्याख्या

(च) बिहारी, मतिराम, घनानन्द और मीरा का संक्षिप्त परिचय

(2) हिन्दी भाषा

(क) हिन्दी भाषा : उद्‌भव और विकास

(ख) 'हिन्दी' के विविध नाम

(ग) 'हिन्दी' शब्द की व्युत्पत्ति

(घ) 'हिन्दी' की प्रमुख शैलियाँ

अंक विभाजन :–
1. दो आलोचनात्मक प्रश्न – 20 x 2 = 40
2. चार लघुत्तरीय प्रश्न – 5 x 4 = 20
3. वस्तुनिष्ठ प्रश्न – 2 x 10 = 20

निर्धारित पुस्तकें :–
1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – सं० डॉ. नगेन्द्र
3. हिन्दी भाषा का विकास – डॉ. भोलानाथ तिवारी
4. हिन्दी भाषा का विकास – डॉ. धीरेन्द्र वर्मा

स्नातक द्वितीय वर्ष

सेमेस्टर IV

आधुनिक भारतीय भाषा हिन्दी (M.I.L.)

(हिन्दी भाषी छात्र–छात्राओं के लिए)

पूर्णांक – 100 उत्तीर्णांक – 33 समय – 3 घंटे

पाठ्यक्रम –

खण्ड (क)

निर्धारित निबन्ध – 1. हरिशंकर परसाई – सदाचार का तावीज

2. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी – कुटज

खण्ड (ख)

हिन्दी भाषा के विविध रूप – तकनीकी भाषा, अनुवाद व्यवहार (अंग्रेजी से हिन्दी)

अंक विभाजन –

आलोचनात्मक प्रश्न	15 x 2 = 30
व्याख्या	10 x 2 = 20
वस्तुनिष्ठ प्रश्न	2 x 10 = 20
तकनीकी हिन्दी	10
अनुवाद व्यवहार	20
	कुल = 100

12/08/13

स्नातक द्वितीय वर्ष

सेमेस्टर IV

आधुनिक भारतीय भाषा हिन्दी (NIH)

(अहिन्दी भाषी छात्र–छात्राओं के लिए)

पूर्णांक – 50 उत्तीर्णांक – 17 समय – 1½ घंटे

पाठ्यक्रम :–

1. पांच फूल (अंतिम 2 कहानी)
2. प्रशासनिक पारिभाषिक शब्दावली हिन्दी से अंग्रेजी, संक्षेपण

अंक विभाजन :–

आलोचनात्मक प्रश्न	20 x 1 = 20
वस्तुनिष्ठ प्रश्न	1 x 10 = 10
प्रशासनिक शब्दावली अनुवाद	2 x 5 = 10
संक्षेपण	10
	कुल = 50

स्नातक द्वितीय वर्ष

सेमेस्टर IV

सामान्य और वैकल्पिक विषय के रूप में हिन्दी

(General and subsidiary)

पूर्णांक – 100 उतीर्णांक – 33 समय – 3 घंटे

पाठ्यक्रम :–

1. [illegible]ामिनी – जयशंकर प्रसाद
2. अंधेर नगरी – भारतेंदु हरिश्चन्द्र
3. [illegible] में एक मौत – कमलेश्वर
4. चीफ की दावत – भीष्म साहनी

अंक विभाजन :–

आलोचनात्मक प्रश्न	20 x 2 = 40
वस्तुनिष्ठ प्रश्न	2 x 10 = 20
व्याख्या	10 x 2 = 20
लघुत्तरीय प्रश्न	5 x 4 = 20
	कुल = 100

स्नातक तृतीय वर्ष

सेमेस्टर – V

पत्र संख्या – 9. हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल

समय – 3 घंटे

उत्तीर्णांक – 45

पूर्णांक – 20 + 80 = 100

पाठ्यक्रम :–

1. कविता का विकास (भारतेन्दु से समकालीन कविता)
2. गद्य का विकास (भारतेन्दु से अद्यतन)
3. हिन्दी की अन्य विधाएँ (संक्षिप्त परिचय) संस्मरण तथा रेखाचित्र, आत्मकथा, जीवनी साहित्य और रिपोर्ताज

अंक – विभाजन –

1. दो आलोचनात्मक प्रश्न – 20 x 2 = 40
2. चार लघूत्तरीय प्रश्न – 5 x 4 = 20
3. वस्तुनिष्ठ प्रश्न – 2 x 10 = 20

निर्धारित पुस्तकें –

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – सं० डॉ. नगेन्द्र
3. आधुनिक साहित्य – आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी
4. हिन्दी कहानी प्रक्रिया और पाठ – डॉ. सुरेन्द्र चौधरी

स्नातक तृतीय वर्ष

सेमेस्टर V

पत्र संख्या – 10, प्रयोजनमूलक हिन्दी

समय – 3 घंटे

पूर्णांक – 20 + 80 = 100

उत्तीर्णांक – 45

पाठ्यक्रम :–

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी – प्रयोजनमूलक हिन्दी से अभिप्राय, प्रयोजनमूलक हिन्दी की प्रयुक्तियाँ और उसके प्रयोगात्मक क्षेत्र, प्रयोजन मूलक हिन्दी और पारिभाषिक शब्दावली, प्रशासनिक हिन्दी और उसकी शब्दावली, प्रशासनिक पत्राचार और उसके प्रकार, संक्षेपण, टिप्पण, प्रारूपण एवं प्रतिवेदन लेखन।
2. अनुवाद – अनुवाद की अवधारणा, महत्त्व और सिद्धान्त, हिन्दी से अंग्रेजी, अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद।
3. वैज्ञानिक तकनीकी एवं प्राद्यौगिकी क्षेत्र में हिन्दी, हिन्दी की वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली।

अंक विभाजन

1. तीन आलोचनात्मक प्रश्न – 16 x 3 = 48
2. चार लघुत्तरीय प्रश्न – 6 x 4 = 24
3. वस्तुनिष्ठ प्रश्न 1 x 8 = 8

निर्धारित पुस्तकें –

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ. विनोद गोदरे
2. कामकाजी हिन्दी – डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया
3. प्रयोजनमूलक हिन्दी–सिद्धान्त और व्यवहार – डॉ. रघुनन्दन प्रसाद शर्मा
4. हिन्दी भाषा का प्रयोजनमूलक स्वरूप – डॉ. कैलाश चन्द्र भाटिया

स्नातक तृतीय वर्ष

सेमेस्टर – V

पत्र संख्या – 11. साहित्यालोचन

पूर्णांक – 20 + 80 = 100

समय – 3 घंटे

उत्तीर्णांक – 45

पाठ्यक्रम :–

1. आलोचना का स्वरूप
2. साहित्य अध्ययन की दृष्टियाँ
   (i) समाजशास्त्रीय
   (ii) मनोवैज्ञानिक
3. साहित्यिक विधाएँ – महाकाव्य, खण्डकाव्य, गीतिकाव्य, एकांकी, उपन्यास, कहानी, निबंध, संस्मरण आदि
4. भारतीय साहित्यशास्त्र एवं सिद्धान्त –
   (i) काव्य लक्षण, शब्द–शक्ति, काव्य–गुण, काव्य–प्रयोजन, काव्य–दोष और रस।
   (ii) अलंकार – उपमा, रूपक, श्लेष, यमक, वक्रोक्ति, मानवीकरण
   (iii) छन्द – चौपाई, दोहा, सवैया, कुंडलियाँ, मन्दाक्रान्ता, हरिगीतिका।

अंक – विभाजन

1. दीर्घ आलोचनात्मक प्रश्न – 16 x 3 = 48
2. चार लघूत्तरीय प्रश्न – 6 x 4 = 24
3. अनिवार्य प्रश्न – 1 x 8 = 8

निर्धारित पुस्तकें –

1. हिन्दी आलोचना – डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी
2. निबंध मुक्तावली – आचार्य रामचन्द्र शर्मा
3. काव्यशास्त्र – डॉ. भगीरथ मिश्र
4. भारतीय साहित्यशास्त्र – आचार्य बलदेव उपाध्याय

स्नातक तृतीय वर्ष

सेमेस्टर V

पत्र संख्या – 12, पाश्चात्य साहित्य सिद्धान्त और हिन्दी आलोचना समय – 3 घंटे

उतीर्णांक – 45

पूर्णांक – 20 + 80 = 100

पाठ्यक्रम –

1. पाश्चात्य साहित्य सिद्धान्त – अरस्तू के अनुकरण और विरेचन सिद्धान्त, लोंजाइनस का उदात्त–मत, रिचर्डस का सम्प्रेषण सिद्धान्त, टी. एस. इलियट की अवधारणाएँ
2. नई समीक्षा, मनोविश्लेषणवादी समीक्षा, मार्क्सवादी समीक्षा
3. बिम्ब, प्रतीक, मिथक और उत्तर आधुनिकता का संक्षिप्त परिचय
4. प्रमुख आलोचक – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी और डॉ. नामवर सिंह।

अंक विभाजन

1. तीन आलोचनात्मक प्रश्न – 16 x 3 = 48
2. चार लघूत्तरीय प्रश्न – 6 x 4 = 24
3. वस्तुनिष्ठ प्रश्न – 1 x 8 = 8

अनुशंसित पुस्तकें / ग्रन्थ

1. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – डॉ. भगीरथ मिश्र
2. वस्तुनिष्ठ काव्यशास्त्र – डॉ. भालेन्दु शेखर तिवारी
3. पाश्चात्य साहित्य चिंतन – डॉ. निर्मला जैन
4. हिन्दी आलोचना – डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी

स्नातक तृतीय वर्ष

सेमेस्टर V

सामान्य हिन्दी (General)

पूर्णांक – 100 उत्तीर्णांक – 33 समय – 3 घंटे

पाठ्यक्रम :–

1. साकेत (नवम सर्ग) – मैथिलीशरण गुप्त
2. कामायनी (श्रद्धा सर्ग) – जयशंकर प्रसाद
3. कुकुरमुत्ता – सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
4. कलगी बाजरे की – अज्ञेय

अंक विभाजन :–

आलोचनात्मक प्रश्न	20 x 2 = 40
वस्तुनिष्ठ प्रश्न	2 x 10 = 20
सप्रसंग व्याख्या	10 x 2 = 20
लघूत्तरीय प्रश्न	5 x 4 = 20
	कुल = 100

निर्धारित पुस्तकें

1. साकेत – मैथिलीशरण गुप्त
2. कामायनी – जयशंकर प्रसाद
3. राम विलास – सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

स्नातक तृतीय — वर्ष

सेमेस्टर — VI

प्रश्न संख्या — 13, जनसंचार माध्यम और हिन्दी पत्रकारिता — समय — 3 घंटे

पूर्णांक — 20 + 80 = 100 — उत्तीर्णांक — 45

पाठ्यक्रम :—

1. जनसंचार माध्यम — अभिप्राय, स्वरूप और विस्तार, जनसंचार माध्यमों के प्रकार
2. हिन्दी पत्रकारिता — विकास, हिन्दी साहित्य और पत्र-पत्रिकाएं
3. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, प्रिंट मीडिया, रेडियो और टेलीविजन पत्रकारिता
4. हिन्दी पत्रकारिता के सामाजिक सरोकार
5. मीडिया लेखन — समाचार लेखन, संपादकीय, अग्रलेख, टिप्पणी आदि

अंक विभाग

1. तीन आलोचनात्मक प्रश्न — 16 x 3 = 48
2. चार लघुत्तरीय प्रश्न — 6 X 4 = 24
3. वस्तुनिष्ठ प्रश्न — 1 x 8 = 8

अनुशंसित पुस्तकें —

1. पत्रकारिता के सिद्धान्त — डॉ. रमेशचन्द्र त्रिपाठी
2. रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता — डॉ. हरिमोहन
3. पत्रकारिता और जनसंचार माध्यम — डॉ. [illegible]

स्नातक तृतीय – वर्ष ✓

सेमेस्टर VI

पत्र संख्या – 14, भाषा विज्ञान

पूर्णांक – 20 + 80 = 100

समय – 3 घंटे

उत्तीर्णांक – 45

पाठ्यक्रम :–

1. भाषा की परिभाषा, भाषा के अंग, भाषा विज्ञान के विभाग, भाषा की प्रकृति और विशेषता, भाषा की परिवर्तनशीलता और परिवर्तन के कारण;
2. भाषा के विविध रूप (मूल भाषा, व्यक्ति बोली, बोली), भाषा और बोली में अन्तर।
3. राष्ट्रभाषा, राजभाषा, संपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा और राजभाषा में विभेद।
4. लिपि एवं देवनागरी लिपि का विकास, देवनागरी लिपि का मानकीकरण।
5. हिन्दी का शब्द भंडार
6. अपभ्रंश, अवहट्ठ और पुरानी हिन्दी का संक्षिप्त परिचय।

अंक विभाजन

1. तीन आलोचनात्मक प्रश्न – 16 x 3 = 48
2. दो लघूत्तरीय प्रश्न – 6 x 2 = 12
3. दो टिप्पणी – 6 x 2 = 12
4. वस्तुनिष्ठ प्रश्न – 1 x 8 = 8

अनुशंसित पुस्तकें

1. भाषा विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी
2. भाषा विज्ञान की भूमिका – आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा
3. आधुनिक भाषा–विज्ञान – डॉ. राजमणि शर्मा
4. हिन्दी भाषा – डा भोलानाथ तिवारी

12/08/13

स्नातक तृतीय – वर्ष

सेमेस्टर – VI

पत्र संख्या – 15. हिन्दी गद्य साहित्य (नाटक एवं एकांकी)

समय – 3 घंटे

उत्तीर्णांक – 45

पूर्णांक – 20 + 80 = 100

पाठ्यक्रम :–

1. नाटक

आधे अधूरे - मोहन राकेश

एकांकी

(क) रीढ़ की हड्डी – जगदीश चन्द्र माथुर

(ख) दीपदान – रामकुमार वर्मा

(ग) बरुण वृक्ष का देवता – डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल

अंक विभाजन –

1. तीन आलोचनात्मक प्रश्न – 16 x 3 = 48
2. तीन सप्रसंग व्याख्या – 8 x 3 = 24
3. वस्तुनिष्ठ प्रश्न – 1 x 8 = 8

अनुशंसित पुस्तकें

1. मोहन राकेश और उनके नाटक – डॉ. गिरीश रस्तोगी
2. आधे अधूरे संरचना और शिल्प – डॉ. सिद्ध नाथ कुमार
3. हिन्दी एकांकी और एकांकीकार – डॉ. रमा सूद

स्नातक तृतीय -- वर्ष

सेमेस्टर VI

पत्र संख्या -- 16, हिन्दी गद्य साहित्य की विविध विधाएँ समय -- 3 घंटे

(निबंध, व्यंग्य, रिपोर्ताज, रेखाचित्र और संस्मरण)

पूर्णांक -- 20 + 80 = 100 उतीर्णांक -- 45

पाठ्यक्रम :--

1. निबंध

(क) साहित्य और जीवन -- नन्ददुलारे वाजपेयी

(ख) कविता क्या है ? -- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(ग) अशोक के फूल -- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

(घ) कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता -- आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

2. रिपोर्ताज

(क) लाल कनेर के फूल -- धर्मवीर भारती

(ख) लालटेन वाली नाव -- धर्मवीर भारती

3. रेखा चित्र

(क) घीसा -- महादेवी वर्मा

4. संस्मरण

(क) सुभद्रा कुमारी चौहान महादेवी वर्मा

5. व्यंग्य

(क) तुम कब जाओगे अतिथि -- शरद जोशी

अंक विभाजन -- 1. तीन दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -- 16 x 3 = 48

2. तीन सप्रसंग व्याख्या प्रश्न -- 8 x 3 = 24

3. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -- 1 x 8 = 8

स्नातक तृतीय वर्ष

सेमेस्टर VI

सामान्य हिन्दी (General)

पूर्णांक – 100 उत्तीर्णांक – 33 समय – 3 घंटे

पाठ्यक्रम :–

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी – प्रयोजनमूलक हिन्दी से अभिप्राय
2. अनुवाद – अनुवाद की अवधारणा, हिन्दी से अंग्रेजी, अंग्रेजी से हिन्दी।
3. भाषा – भाषा की परिभाषा, सम्पर्क भाषा, राज भाषा और राष्ट्रभाषा।
4. हिन्दी का शब्द भंडार

अंक विभाजन :–

आलोचनात्मक प्रश्न	15 x 4 = 60
वस्तुनिष्ठ प्रश्न	2 x 10 = 20
लघूत्तरीय प्रश्न	5 x 4 = 20
	कुल = 100

निर्धारित पुस्तकें

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी – विनोद गोदरे
2. भाषा विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी

प्रथम वर्ष

सहायक पुस्तकें –

1. साहित्यालोचन – कृष्णदेव झारी
2. साहित्य सहचर – हजारी प्रसाद द्विवेदी
3. रीतिकाल की भूमिका – डॉ. नगेन्द्र
4. हिन्दी साहित्य का उत्तर मध्यकाल – डॉ. महेन्द्र

द्वितीय वर्ष

सहायक पुस्तकें –

1. कहानी नई कहानी – नामवर सिंह
2. निराला की साहित्य साधना – रामविलास शर्मा
3. छायावाद – नामवर सिंह
4. दिनकर – सावित्री सिन्हा
5. आधुनिक कविता यात्रा – रामस्वरूप चतुर्वेदी
6. कविता के नये प्रतिमान – नामवर सिंह
7. नागार्जुन की कविता – अजय तिवारी

तृतीय वर्ष

सहायक पुस्तकें –

1. भाषा विज्ञान – भोलानाथ तिवारी
2. भाषा विज्ञान की भूमिका – देवेन्द्रनाथ शर्मा
3. हिन्दी नाटक और रंगमंच – गिरीश रस्तोगी
4. प्रसाद का नाट्य चिंतन – शिवनाथ कुमार
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास – रामचंद्र शुक्ल
6. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ. विनोद गोदरे
7. कामकाजी हिन्दी – डॉ. कैलाशचंद्र त्रिपाठी
8. पत्रकारिता के सिद्धांत – डॉ. रमेशचंद्र त्रिपाठी
9. रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता – डॉ. हरिमोहन
10. गद्य का विकास–विस्तार – डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी